International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 76-79

उत्तर प्रदेश राज्य के सेवारत प्राईमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का अध्ययन

[1] Dr. Sanjay Kumar, [2] Anju Bala
[1] Assistant Professor, Department of Education, Affiliated College, CCS Univ. Meerut, Uttar Pradesh, India
[2] Research Scholar, DBHPS, Institute of National Importance, Madras, Tamil Nadu, India

सारांश
शिक्षा व शिक्षक समाज की वह शक्ति व धुरी है, जो समाज का निर्माण करती है। शिक्षक अपने आचरण से, कार्य से व अपनी सोच से समाज व विद्यार्थीयों पर गहरा प्रभाव डालता है। प्राथमिक स्कूल छात्रों के लिए विशेष स्थान होता है। समाज में आने वाले बदलाओं या समाज में लाये जाने वाले बदलाओं के मूल में एक शिक्षक का व्यक्तित्व व उसकी समस्याएं होता है। किसी भी सामाजिक का गौरवशाली व उच्च स्थान पर पहुचने से पहले एक शिक्षक का अध्ययन करना आवश्यक है। उसके के शिक्षण–प्रशिक्षण व शिक्षा पद्धति का अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है।

मूल शब्द प्राईमरी स्कूल व अभिवृति

प्रस्तावना
अध्यापक और विद्यार्थी के बीच जो स्नेह, भाव, आत्मीयता, सौहार्द, समीपता की आवश्यकता है, वह आज नहीं है और यही कारण है कि आज का विद्यार्थी डिग्री, डिप्लोमा ले लेता है लेकिन व्यावहारिक जीवन का शिक्षण, चरित्र, ज्ञान उत्कृश्ट व्यक्तित्व का उसमें अभाव रहता है। इन सबके बिना विद्या अधूरी है। जो जीवन को प्रकाशित न करे, पुश्ट न बनाए तो वह विद्या किस काम की ? चरित्र निर्माण की, व्यावहारिकता की शिक्षा पुस्तकों में नहीं मिल सकती। वह तो व्यक्ति की समीपता से, उसके चरित्र, आचरण को देखने, समझने से प्राप्त होती है, जो आज की शिक्षा–पद्धति में नहीं के बराबर है। एक बार कवीन्द्र रबीन्द्र ने कहा था –''शिक्षा के सम्बन्ध में एक महान सत्य हमने सीखा था कि मनुश्य से ही मनुश्य सीख सकता है। जिस तरह जल से ही जलाश्य भरता है, दीप से ही दीप जलता है, उसी प्रकार प्राण से प्राण सचेत होता है। चरित्र को देखकर ही चरित्र बनता है। गुरू के सम्पर्क–सानिन्ध्य, उसके जीवन से प्रेरणा लेकर ही मनुश्य–मनुश्य बनता है। आज का ''शिक्षक प्राण नहीं दे सकता, चरित्र नहीं देता, वह व्याख्यान दे सकता है। इसलिए आज का छात्र किसी दफ्तर, अदालत का एक बाबू बन सकता है लेकिन मनुश्य नहीं बन पाता है।'' आज का शिक्षक वर्ग उन वर्गो में से है, जिसके उद्धार की सबसे अधिक आवश्यकता है। हमारे देश का शिक्षक बहुत ही सामान्य स्थिति में जीवन–निर्वाह करता है। वर्तमान में जहाँ एक तरफ मनुष्य स्वचालित भौतिक और अन्तरिक्ष सभ्यता की ओर अग्रसर हो रहा है वहीं दूसरी ओर उसकी अस्मिता को बाँधने वाले अदृश्य संवेदनाओं के तन्तु बिखरते जा रहे हैं। यहबिखरी चेतना उसे लोकमंगल और कल्याणकारी शक्ति दे पायेगी अथवा नहीं यह प्रश्न पिछले दशकों से बुद्धिजीवियों के चिन्तन का क्षेत्र बना हुआ है। मूल्यों का स्वरूप विविध है। प0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अनुसार–"हमारे धर्मशास्त्रो" के अनुसार किसी भी समाज के अध्यापक का अपना विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान होता है। पुरानी और नई पीढ़ी के मध्य वह न केवल एक सेतु का कार्य करता है वरन् आने वाली पीढ़ी को कल के समाज का नेतृत्व संभालने और उसके गम्भीर उत्तरदायित्व को वहन करने योग्य भी शिक्षक ही बनाता है। पुरानी आचार्य परम्पराएं परिस्थितियों वश समय के परिवर्तन के कारण समाप्त हो गई है फिर भी आज अध्यापक कुछ अंशों में उसका ही आधुनिकरण रूपान्तरण है। समय के साथ शिक्षा पद्धति पाठ्यक्रम आदि में परावर्तन हो सकता है, लेकिन गुरू एवं शिष्य का सम्बन्ध रहता है और रहेगा। अध्यापक और विद्यार्थी जो स्नेह, भाव, आत्मीयता, सौहार्द्र, समीपता की आवश्यकता है, वह आज नहीं है और यही कारण है कि आज का विद्यार्थी डिग्री डिप्लोमा ले लेता है लेकिन व्यावहारिक जीवन का शिक्षण चरित्र, ज्ञान उत्कृश्ट व्यक्तित्व का उसमें अभाव रहता है। इन सबके बिना शिक्षा अधूरी है। चरित्र निर्माण की व्यवहारिकता की शिक्षा पुस्तकों में नहीं मिल सकती वह भी शिक्षक, के आचरण को देखने, समझने से आता है।

शैक्षिक शोध की आवश्यकता क्यों? (Why Need of the study):
शिक्षक की वर्तमान दशाः
विद्यालय में बालकों को ज्ञान प्रदान करने के साथ ही वर्तमान युग की आवश्यकताओं, रीति–रिवाजों तथा विभिन्न जीवन मूल्यों से भी बालकों को परिचित कराने का दायित्व शिक्षकों पर ही आता है। जैसा कि एडम्स ने कहा भी है कि अध्यापक का प्रभाव छात्र पर अनन्त तक पड़ता है। मूल्य का सम्बन्ध संस्कृति, परम्परा, धर्म व समस्त संस्थाओं से होता है यह समाज के व्यवहार और आचरण से सम्बन्ध रखता है। समाज में जैसे–जैसे सामाजिक परिवर्तन की धाराएँ प्रभावित होती चलती हैं और परिवर्तन होते हैं, उसी अनुरूप सामाजिक आचरण व व्यवहार के मानकों में भी परिवर्तन आता है। व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहारों का स्वरूप सामाजिक प्रतिमानों या मानदण्डों से जुड़ा होता है। जब आत्मानुभूति जीवन का शाष्वत लक्ष्य था तब प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के आचरण व व्यवहार इस लक्ष्य की प्राप्ति की ओर उन्मुख हुए। वर्तमान में जब समाज वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी कुशलता की ओर बढ़ रहा है, तब यह विश्व एक समाज संस्कृति बनती जा रही है। इस प्रकार समाज में आचरण और व्यवहारों की नैतिकता का आधार वैज्ञानिक बन रहा है।

शिक्षक के द्वारा समाज का सन्तुलन स्थापित होता है। आदिकाल से लेकर वर्तमान तक में शिक्षक का अपना महत्व तथा स्थान रहा

है। अतः सेवारत् शिक्षकों के बारे मे जानना, उनकी समस्याओं को समझना और उनकों समाज राष्ट्र निर्माता मानना आज की महती आवश्यकता है। आज उन्हें अपना स्वाभिमान बनाऐ रखने का अवसर मिला होता तो शिक्षक संगईनों का जन्म ही न होता। शिक्षक को आज ही नहीं वैदिक काल से समाज को दिशा देना, राष्ट्र की आवश्यकतानुसार आदि उत्तरदायित्वों का वहन निस्वार्थ करना होता है। अतः आज वर्तमान शोध समस्या की उपादेयता को शोधकर्ता निम्न रुपों में वर्णन करता है–कार्यरत शिक्षक एक अनुभवी, समस्या समाधान में निपुण और आने वाले कल के लिए उपयोगी होता है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक संगईनों को इस ओर ध्यान देने के लिए बाध्य कर देना कि कोई भी शिक्षक अपने को असहाय असमर्थ और अकेला महसूस न करे। वर्तमान समय में बी0एड0 या बी0टी0सी0 करने के लिए लाखों रूपये खर्च करने के बाद जो भी व्यक्ति सरकारी अध्यापक बन जा रहा है, वह अध्यापक ज्ञान के विस्फोट के सत्य को स्वीकार करने कौ तैयार नहीं है और न ही अपने शिक्षण सम्भावनाओं को मान रहा है। आज का अध्यापक येन–केन प्रकारेण अपनी सुविधानुसार विद्यालयों के चयन हेतु सदैव परेशान रहता है। शायद इसी कारण वह पठन–पाठन कार्य में, या कक्षा में जाने में रूचि नहीं लेता। इस परिस्थिति में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आज का अध्यापक बदल गया है, पुराने मापदण्डों पर खरा नहीं बैठ रहा और वह बिना काम किये सफल डाक्टर के समान महत्वाकांक्षी हैं। आज का अध्यापक यह भूल रहा है कि आदर या पद कार्य से प्राप्त करना होता है, थोक के भाव नहीं मिलता। वह श्रेष्ठता प्राप्त करने का प्रयास ही नहीं कर रहा है। वह भूल गया है कि उसका भविष्य उसके ज्ञान एवं उसकी कार्यनिष्ठा में निहित है। कुछ विद्वानों का मत है कि समाज की शिक्षकों के प्रति उपेक्षापूर्ण नीति भी शिक्षकों की दशा को दयनीय बनाने में महत्वपूर्ण कारक है। वेतन एवं अन्य सुविधाओं के बाद भी शिक्षक का जीवन समाज के अन्य लोगों की तुलना में खराब ही पाया जाता है। अच्छे स्कूलों, कॉलेजों या विश्वविद्यालयों में प्राथमिकता के आधार पर उनके बच्चों का दाखिला दिलाने का कोई इन्तजाम नहीं होता है। बच्चों को उच्च तकनीकी शिक्षा दिलाने में भी वे अपने को सामर्थ्यहीन महसूस करते हैं।

समस्या कथन (Statement of the problem):

प्रस्तुत शोध विशय का शीर्शक–

उत्तरप्रदेश राज्य के सेवारत् प्राईमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का अध्ययन है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of research work):

अनुसंधान प्रस्ताव एक तर्कयुक्त बौद्धिक प्रक्रिया है, इसका उद्देश्य समस्या समाधान के प्रति अग्रसरण करना है। ऐसी समस्या किसी क्षेत्र से सम्बद्ध होती है। किसी भी शोधकर्ता का कार्य उसके उद्देश्यों में समाहित व निर्देशित होता हैं। वस्तुतः प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्य उद्देश्य गाजियाबाद, मेरठ व हापुड़ जिले के प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय विद्यालयों के छात्रों के संदर्भ में शोधकर्ता द्वारा निम्न लिए गए हैं–

1. नगर क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक सेवारत् अध्यापकों (स्त्री–पुरुश) की समस्या परिसूची में अध्ययन करना।
2. कस्बा क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् पुरुश–स्त्री अध्यापकों की समस्या परिसूची का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् पुरुश तथा स्त्री अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन करना।

परिकल्पना (Hypothsis):

प्रस्तुत अध्ययन अपने आप मे एक नवीन व महत्वपूर्ण अध्ययन है और इस प्रकार के उद्देश्यो को लेकर किए कए अध्ययनो का भी इस संभाग मे अभी अभाव है। वस्तुतः प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने उद्देश्यों की प्रकृति को देखते हुए शून्य परिकल्पना का उपयोग किया है। इस आधार पर अध्ययन के प्राप्य उद्देश्यो में प्रयुक्त शून्य परिकल्पनाओं का विवरण निम्नवत हैं–

1. नगर क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक सेवारत् अध्यापकों (स्त्री–पुरुश) की समस्या परिसूची में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कस्बा क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् पुरुश–स्त्री अध्यापकों की समस्या परिसूची में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् पुरुश तथा स्त्री अध्यापकों की समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या (Population):

जनसंख्या से अभिप्राय उन सभी व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा तथ्यों के समूह से होता है, जो पूर्व परिभाषित

विशेषताओं के क्षेत्र में आता है। प्रस्तुत अध्ययन में कारक संरचना के आधार पर बहु–स्तरित दैव न्यादर्श विधि द्वारा उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद, मेरठ व हापुड जिले के आस–पास के जिलों के प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय के 600 शिक्षकों का चयन किया गया।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

सम्पत कुमार डी0 (अगस्त 2012) ''भारत में शिक्षा का सुधार उपलब्धियाँ'' इनके अनुसार भारत एक वैश्विक नेता और एक मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरा है और यह शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। राष्ट्र निर्माण के लिए उपेक्षित ज्ञान और निरन्तर विकास की राह में जनसंख्या सबसे बड़ी बाधक है। जिससे यह भारत की 25 प्रतिशत की आबादी को निरक्षर करती है। हमारी शिक्षा प्रणाली जिज्ञासा और सवाल पूछने की क्षमता को कुछ कम करने की होड़ होती है। जिससे प्रतिभाशाली छात्रों को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और शिक्षा हमारे साथ शुरू से है और अन्त तक रहेगी और इस तरह शिक्षा के स्तर को उठाने का प्रयास हर विकसित तथा विकासशील देशों की करना चाहिए।

अभिपाशा बेन एवं याज्ञिनक (जून 2014) ''ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों का छात्राओं की शिक्षा में भूमिका'' शिक्षकों की बदलती भूमिका उन्हें एक बोर्ड के नजरिये के लिए एक धक्के समान है। जो दोनो के लिए एक मुख्य शैक्षिक और उनकी सामाजिक भूमिका का गठबन्धन है। शिक्षकों को भी दो स्थितियों के बीच अपने शैक्षिक कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए इस प्रकार प्राथमिक स्तर पर शिक्षको की भूमिका प्रकृति में बहुआयामी है।

परिकल्पना संख्याः 1

1' नगर क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक सेवारत् अध्यापकों (स्त्री–पुरुश) की समस्या परिसूची में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 4.1: नगर क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक सेवारत् अध्यापकों (स्त्री–पुरुश) की समस्या परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात–

अध्यापक स्तर	संख्या (N0.)	मध्यमान (Mean)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान अन्तर (M~M)	क्रान्तिक निश्पत्ति (C.R.)	सार्थकता
प्राईमरी	50 पुरुश	23.38	3.56	2.88	4.17	0.01 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	26.26	3.31			
माध्यमिक	50 पुरुश	25.48	1.7	2.40	4.9	0.01 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	27.88	2.99			

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरणः

सारणी नं0 4.10 में नगर क्षेत्र के सेवारत् प्राईमरी अध्यापक स्तर के पुरुश एवं महिला अध्यापकों की समस्याओं से संबंधित मूल प्राप्तांकों के मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं 'टी' परिक्षण आदि का आंकलन किया गया। इसमें प्राईमरी स्तर के पुरुश अध्यापकों का मध्यमान 23.38 तथा महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान 26.26 रहा। इनमें महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान 2.88 अधिक पाया गया। इससे यह स्पश्ट होता है कि प्राईमरी स्तर की सेवारत् महिलाओं में समस्याओं का प्रभाव अधिक होता है। अपेक्षाकृत पुरुश वर्ग के प्राईमरी स्तर की महिला तथा पुरुश वर्ग के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के परिक्षण के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जो 4.17 आया है। यह क्रान्तिक अनुपात 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक रहा है। अतः निश्कर्श के तौर पर यह कहा जा सकता है कि सेवारत् प्राईमरी नगर क्षेत्र पुरुश तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं में अंतर है।

2. कस्बा क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् पुरुश–स्त्री अध्यापकों की समस्या परिसूची में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 2: कस्बा क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् पुरुश–स्त्री अध्यापकों की समस्या परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात–

अध्यापक स्तर	संख्या (N0.)	मध्यमान (Mean)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान अन्तर (M~M)	क्रान्तिक निश्पत्ति (C.R.)	सार्थकता
प्राईमरी	50 पुरुश	25.20	2.11	1.32	3.0	0.01 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	26.52	2.32			
माध्यमिक	50 पुरुश	23.28	1.8	0.06	1.05	असार्थक
	50 महिला	23.88	3.7			

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरणः

कस्बा क्षेत्र के सेवारत् पुरुश तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं का सॉख्यिकीय विश्लेशण प्रस्तुत किया है। इसमें प्राईमरी अध्यापकों पुरुश – महिला की समस्याओं में भिन्नता मिली है। जबकि माध्यमिक स्तर के पुरुश–महिला अध्यापकों में समस्याओं से सम्बन्धित स्थापित हुई है। कस्बा क्षेत्र के प्राईमरी स्तर के पुरुश अध्यापकों का मध्यमान 25.20 रहा है। जबकि महिला अध्यापकों का 26.52 रहा है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 1.32 आया है। पुरुश तथा महिला अध्यापकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के परीक्षण के लिएक्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जो 3.0 आया है। यह क्रान्तिक अनुपात 0.01 विश्वासस्तर पर सार्थक रहा है। इस तरह से निश्कर्श निकलता है। कि कस्बा क्षेत्र के सेवारत् पुरुश तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं में अन्तर है।

3. ग्रामीण क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् पुरुश तथा स्त्री अध्यापकों की समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 3

अध्यापक स्तर	संख्या (N0.)	मध्यमान (Mean)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान अन्तर (M~M)	क्रान्तिक निश्पत्ति (C.R.)	सार्थकता
प्राईमरी	50 पुरुश	25.20	2.34	0.98	2.04	0.05 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	26.18	2.45			
माध्यमिक	50 पुरुश	24.80	2.08	0.48	1.3	असार्थक
	60 महिला	25.28	1.6			

ग्रामीण क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् पुरुश तथा स्त्री अध्यापकों की समस्याओं के प्राप्तांकों पर प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात–

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरणः–

सारणी संख्या–3 में ग्रामीण क्षेत्रों में प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से सेवारत् होने वाले पुरुश तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं का सांख्यिकी विश्लेशण प्रस्तुत किया गया है। इनको देखने से स्पश्ट होता है कि शिक्षा क्षेत्र के दोनों ही अध्यापक समूहों में प्राईमरी स्तर पर अपनी–अपनी समस्याओं में अन्तर रखते है। लेकिन माध्यमिक स्तर पर यह अन्तर स्पश्ट नहीं हुआ है शोधकर्त्ता ने प्राईमरी स्तर के पुरुश–महिला समूहों की समस्या परिसूची के मूल प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की गणना सांख्यिकी आधार पर की है। इसमें पुरुशों का मध्यमान 25.20 तथा महिला वर्ग का 26.18 रहा है। इनका अन्तर 0.98 है। जिसका ऑकलित क्रान्तिक अनुपात 2.04 रहा है। जो विश्वास स्तर 0.05 पर सार्थक रहा है। इस क्रान्तिक अनुपात से स्पश्ट होता है। कि पुरुश तथा महिला प्राईमरी अध्यापकों की समस्याओं में अन्तर होता है।

शोध–अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थः

1. नगर क्षेत्र के सेवारत् प्राईमरी अध्यापक स्तर के पुरुश एवं महिला अध्यापकों की समस्याओं से संबधित मूल प्राप्तांको के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं 'टी' परिक्षण आदि का

आकंलन किया गया। इसमें प्राईमरी स्तर के पुरुश अध्यापकों का मध्यमान 23.38 तथा महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान 26. 26 रहा। इनमें महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान 2.88 अधिक पाया गया। इससे यह स्पश्ट होता है कि प्राईमरी स्तर की सेवारत् महिलाओं में समस्याओं का प्रभाव अधिक होता है।

2. कस्बा क्षेत्र के सेवारत् पुरुश तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं का सांख्यिकीय विश्लेशण प्रस्तुत किया है। इसमें प्राईमरी अध्यापकों पुरुश व महिला की समस्याओं में भिन्नता मिली है। जबकि माध्यमिक स्तर के पुरुश व महिला अध्यापकों में समस्याओं से सम्बन्धित स्थापित हुआ है।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में प्राईमरी तथा माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से सेवारत् होने वाले पुरुश तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं का सांख्यिकी विश्लेशण प्रस्तुत किया गया है। इनको देखने से स्पश्ट होता है कि शिक्षा क्षेत्र के दोनों ही अध्यापक समूहों में प्राईमरी स्तर पर अपनी–अपनी समस्याओं में अन्तर रखते है। लेकिन माध्यिमिक स्तर पर यह अन्तर स्पश्ट नहीं हुआ है शोधकर्त्ता ने प्राईमरी स्तर के पुरुश–महिला समूहों की समस्या परिसूची के मूल प्राप्तॉकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की गणना सांख्यिकी आधार पर की है।

प्रस्तुत शोध–अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता निम्नवत है–

1. शोध–अध्ययन, अध्ययनरत शिक्षक के जीवन के दोहरे स्वरूप के कारण बढ़ती मानसिक विकृतियों के कारणों तथा निवारणों को ज्ञात करने में सहायक होगा।
2. शोध–अध्ययन, अध्ययनरत छात्रों को मूल्य–प्राथमिकता के आधार पर अपने कार्य से समायोजन स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में, जहां छात्रों को घरों की दीवारों के मध्य ही जीवन व्यतीत करना होता है, शोध के निष्कर्षो के आधार पर गोष्ठी तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा सामाजिक बदलाव लाया जा सकता है।
4. मानसिक स्वास्थ्य व जीवन सन्तुष्टि के अध्ययन द्वारा छात्रों की मनोस्थिति एवं उनके व्यवहारगत परिवर्तनों के कारणों का पता लगाने में शोध सहायक हो सकता है।
5. सेवारत् शिक्षक प्रायः अपने कार्यक्षेत्र व पारिवारिक वातावरण में अनेकों बार प्रतिकूल स्थितियों का सामना करते हैं, शोध–अध्ययन ऐसी परिस्थितियों में उचित मार्गदर्शन प्रदान करने में कारगर सिद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ

1. अदाबल यस बी– क्वालिटी ऑफ टीचर्स ट्रे ऑफ टीचर्स अभिताभ प्रकाशन इलाहाबाद 1979
2. अरोरा के –डिफरेन्सेज बिटविन इफेक्टीब एन्ड इन इफेक्टीब टीचर्स नयी दिल्ली यस चॉद 1978
3. अल्पोर्ट, बर्नन औरलिन्डजे– मैनुबल फॉर द स्टडी ऑफ वेल्यूज वोस्टन 1960
4. अहलूवालिया यस.पी–डेवेल्पमेंट ऑफ टीचर एटीट्यूड इनमेन्टरी एण्ड स्टडी ऑफचेन्ज इन प्रोफेसनल एटीट्यूड ऑफ स्टूडेन्ट टीचर डिपार्टमेन्ट ऑफ बी.यच.यू. 1974
5. आयजेनिक–मैनुअल ऑफ माडस्ले परसोनेलिटी इन्वेन्टरी यूनिवर्सिटी ऑफ लन्दन प्रेस, 1959 बी
6. आन्नद यस. पी.–टीचर इफीक्टीभनेस इन स्कूल्स जनरल ऑफ इण्डियन एजूकेशन 1983
7. आलपोर्ट, परसेनेलिटी–ए साइकोलोजिकल इण्टरप्रीटेशन, न्यूयार्क, हाल्ट, 1937
8. आलपोर्ट, जी.डब्लू.–एटीटॅयूड इन सी. मरचिंसन (इड)'' हैण्डबुक ऑफ सोसल साइकोलाजी, क्लोर्क यूनिर्वसिटी प्रेस 1935
9. इनसाइकलोपिडिया ऑफ एजूकेसनल रिसर्च, थर्ड एडीसन, न्यूयार्क
10. एण्डूज जान एच एम–एण्डमिनिस्ट्रेटिभ सिगनिफिकेंस ऑफ साइकोलोजिक डिफरेसेज विटवीन सेकेण्डरी टीचर्स ऑफ डिफरेन्ट सब्जेक्ट फिल्ड''एलबर्ट जरनल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च दिसंबर1957(3)
11. ओजुम्बा के. ई.–ए ऑफ रिम्यू स्टेट ऑफ आर्ट ऑफ रिसर्च आन एसेसिंग टीचर एफकेटिभनेस, अफ्रीका, ओटबा आईडीआरसी 1978
12. कक्ड़–ए स्टडी ऑफ बेल्यू ऑफकालेज एण्ड पर्सपेक्टिभ टीचर्स बाई ए0भी0 यल, मैथड 1971'' रिपोर्ट ऑफ इ0 आर0 आई0 सी0 फन्डेड रिसर्च रिपोर्ट 1986